हम पुछैत छी

हम पुछैत छी

विनीत उत्पल

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-05-1

Price Rs.160/-

US $ 25 (for abroad)

पहिल संस्करण : 2009

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर,

नई दिल्ली-११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७

Website :http ://www.shruti-publication.com

e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Cover Design by : Ravindra Kumar Das

Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :

AJAY ARTS

4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002.

Telephone : 2328-8341, 4362-8341

HUM PUCHHAIT CHHI by Vinit Utpal

poems in Maithili Language

समर्पण

माँ प्रेमलता झा आ
पापा डॉ. वेदानन्द झाकेँ
जिनकर कोरामे बैस
बाजैक, पढैक, लिखैक आ सोचैक
क्षमता पौलहुँ।

कविक आत्मोक्ति : कविताक अएना

विश्व बजारी एहि समाजमे भाषा-साहित्य सभक संसारमे सेहो बजारे जकाँ मंदी पसरल अछि। लगभग इएह परिस्थिति बेसी कला-विधाक बुझाइछ। साहित्यमे किछु आर विशेषे। ताहूमे कविताक विधा आओरो अनठिआएल अछि, किछु स्वयं कात करोट भेल आ किछु कएल जा रहल अछि। प्रकाशके टा द्वारा नहि, स्वयं संबंधित भाखा-भाखी अधिसंख्य लोक समाज द्वारा सेहो। जतए स्वयं कविक द्वारा, से अवश्य खेद करबाक विषय। कविता व्यक्तिकें अपन समाजमे एकटा आओर प्रतिष्ठा मात्र दिअएबाक मूल्यपर बेशी दिन जीवित नहि रहि सकैत अछि। अर्थात् कोनो सम्भ्रान्त व्यक्तिक भव्य ड्राइंग रूममे एकटा आओर इम्पोर्टेड दामी वस्तुक प्रदर्शनीय नमूनाक माल कविता नहि बनाओल जा सकैत अछि, जे कि दुर्भाग्यसँ भऽ रहल अछि।

भाषा वैह टा ओतबे जीवित अछि वा रहएवाली बुझा रहल अछि जे मात्र अपन भाषिक उपयोगिता बा कही अपन क्रय-विक्रय-मूल्यक बलेँ जीवित रहि सकए। ग्लोबल बजारमे भाषा अपन प्रवेश- जतेक दूर आओर गहींर धरि करबाक क्षमता रखने अछि, ताहि सामर्थ्यक उपयोगितेपर, ओतबे दुआरे जीवित राखल जा रहल अछि, कोनो अपन काव्य-सम्पत्ति, सांस्कृतिक अस्मिता आ भाषाक प्राचीनता बा महानताक जातीय स्वाभिमानक आधारपर नहि। तें दुर्भाग्यवश ई समए अपन-अपन भाषाक महानता लऽ कऽ आत्म गौरवसँ भरब तँ फराक, जे मुग्ध पर्यन्त होएबाक समय नहि बाँचि गेल अछि। हँ, भाषाक 'दाम' लऽ कऽ निश्चिन्त रहबाक बा कम बिकाएब लऽ कऽ चिन्तित होएबाक समय अछि।

मुदा कवितामे भाषाक आशय आ अस्तित्वकें एहन तात्क्षणिक बूझि लेब कोनो भाषा-साहित्यक मूलसँ छूटि कऽ आगाँ बढ़बाक बुद्धिकें अवसरवाद छोड़ि, दोसर किछु ने मानल जा सकैत अछि। समकालीन समस्त कविकेँ, नवागन्तुककेँ तँ अनिवार्यतः बजार आ कविता भाषाक बीचक एहि भेदकेँ नैतिक बुद्धियेँ बूझिए कऽ एकर बाट चलबाक प्रयोजन। अन्यथा ई कविता सेहो एकटा नव पैकेटक नव उत्पाद बनि कऽ दोकानमे रहत। पोथीक दोकानमे नहि। साज-शृंगारक कोनो मॉलमे, जतऽ जनसाधारण लोकक पहुँचबो दुर्लभ ! आब से बजार आ कविताक भाषाक

एहि द्वन्द्वसँ निकलैत भाषाक ई यात्रा कोन नीति-बुद्धिसँ कएल जएबाक प्रयोजन ताहि विषयपर गंभीरतासँ मंथन करऽ पड़त। स्वविवेक। ई त्वरित चाही। उत्पल जीक एहि कविता-पाण्डुलिपिक लाथेँ, ई चर्चा हमरा अभीष्ट भेल आ संभव, एकर श्रेय तँ हम हिनके दैत छियनि।

कविता भाषाहिक सवारीपर लोक धरिक अपन यात्रा करैत छैक। जेहन सवारी, जेहन सवार तेहन यात्रा। ताहीमे गन्तव्य, काव्यबोध, युग आ जीवन-दर्शन समेत बहलमानी कही, कोचमानी कही, बा ड्राइभरी-पॉयलटी तकर कर्म कुशलता, ई सभ तत्व अंतर्निहित छैक। बल्कि कएटा अन्यान्यहुँ विषय जे कोनो कवि अपना साधनाक प्रक्रिया आ स्वविवेकसँ निरन्तर अपने विकसित करैत जाइत अछि। मुदा तकरा यथावत शब्दमे कहि सकब, प्रायः एखनो हमरा बुतेँ संभव नहि। कए दशकसँ कविता लिखि रहल छी।

हिन्दी सन व्यापक भाषाक स्थापित नीक-नीक स्वनामधन्य कवि पर्यन्त अपन कविता-पोथी अपने छपा रहल छथि। बिकाइ छनि तँ बेचि रहल छथि। कोनो ब्रांड प्रकाशकसँ खामखा छपबहि चाहैत छथि तँ ओकरा पुष्ट मात्रामे धन दैत छथिन। सरकारी पुस्तकालय सभमे थोक मात्रा मे 'खपबा' देबाक वचन दैत छथिन, तखन अपन गुडविल दैत छनि। वा अपने अर्थ सक्षम कवि-लेखक अपना पुस्तकक संपूर्ण प्रकाशन-व्यय स्वयं करैत छथि। तें पाठक आइ धनिके कवि टा कें, ब्रांड प्रकाशन सभमे पढ़ि सकबाक सौभाग्य पबैत अछि।

मैथिलीक स्थान निरूपण तँ सहजहिं कएल जा सकैए। मैथिलीमे तँ ओहिना प्रायः सभ टा साहित्ये लेखक-कविकेँ अपना अपनी कऽ अपने छपबावऽ पड़ैत छैक। महाकवि यात्रीजी पर्यन्त विषय आबहु जीवित, अति पुरना किछु लोक आ यात्रीजीक स्नेही-श्रद्धालु पाठक समेत हमरा खाढ़ीक हुनक स्नेह-समीपी किछु रचनाकारकेँ बिसरल नहि हेतनि। पोथीक प्रसार आ विक्रयसँ मैथिल लेखकक केहन उद्यम जुड़ल रहलैक अछि ! प्रकाशक कतऽ ? अर्थात् कविता आ साहित्य कवि आ साहित्यकारहिक संसारमे जीवित अन्यथा मृत नहियोँ तँ अनुपस्थित तँ अनुभव कएले जा रहल अछि। ई युग यथार्थ एकदम देखार अछि।

एहनामे एकटा मैथिल युवक अपन समस्त ऊर्जा-उत्साहक संग दिल्ली मे कोनो संध्या बा प्रात अपन मैथिली कविताक पाण्डुलिपि दैत अपनेकेँ 'भूमिका' लिखि देबाक आग्रह करथि तँ केहन लागत ? मतलब

जे प्रथम दृष्टया केहन अनुभव हएत? हमरा तँ युवक दुस्साहसी बुझएलाह। ओना जकरा साहस नहि हेतैक से कविताक बाट धइयो कोना सकैये !

किंचित असमंजस तँ भेबे कएल। भूमिका-लेखन-काज सेहो एहि युगमे अपन धर्मान्तरण कए लेलक अछि। हमर प्राथमिकतासँ तँ बाहरे अछि। तथापि यदि कोनो मैथिली कविताक भविष्य एना सोझाँ उपस्थित हो तँ स्वागत कोना नहि हो !

पाण्डुलिपि पढ़वाक बाद कवि प्रतिभाक अनुभव, प्रिय आ आश्वस्तिकारक बुझाएल। स्वागत तँ कहल अछि। उत्पलजीक प्रतियें उद्गारमे।

कविक प्रस्तावना हिनक कविताक संसारकेँ बुझबामे विशेष सहायक अछि जे ई बड़ स्पष्ट बुद्धियेँ आ पूर्ण मनोयोगसँ लिखलनिहेँ। हिनकर रचनाक बुनियादी वर्तमान आ सरोकारक उद्घोष जकाँ छनि। से मात्र वयसोचित उच्छ्वास नहि, बल्कि अपन वचनबद्धताक स्वरूपमे कहल गेल छनि।

सभ समयक नवीन पीढ़ी रचनाकारक सम्मुख अपन वर्तमाने प्रायः सभसँ प्रखर चुनौती रहैत छैक। अतीत आ भविष्य तँ अढ़मे रहैत छैक। रचनाकारक रूपमे अतीतक वास्ते ओकर नीक-बेजायक वास्ते ओकरा उत्तरदायी नहि बनाओल जा सकैए। यद्यपि ताही तर्कसँ भविष्यक लेल ओकरा छोड़ि सेहो नहि देल जा सकैए। कारण समाजक भविष्य निर्माणक प्रक्रियामे अन्य सभ सामाजिक कारण आ प्रेरक परिस्थिति सभ समेत, समकालीन रचनाकारहुक परोक्ष मुदा प्रमुख भूमिका रहबे करैत छैक। तँ कविक दायित्व लऽ दऽ कऽ अपन समकालीनताक ज्ञान आओर अनुभवकेँ विवेक सम्मत सम्वेदनाक रूपमे विकसित करैत अग्रसारितो करऽ पड़ैत छैक। जाहि सघनता आ व्यापकतासँ कवि युगक अतीत-ताप अर्थात् जीवनक दुःख-द्वन्द्व आ यथार्थकेँ बूझि-पकड़ि पबैत अछि आ तकरा अपन रचनामे दूरगामी प्राणवत्ताक कलात्मक शिल्प दऽ पबैत अछि, सैह ओकर प्रतिभाक सामर्थ्यक रूपमे दर्ज कएल जाइत छैक।

कोनो रचनाकार अपना कृतिमे बहुत युग धरि रहबाक सहज आकांक्षी होइतहिँ अछि। तँ हमरा जनैत मनुक्खक जिजीविशा आओर कविताक जिजीविशामे तात्विक किछु भेद नहि। कवि जे अंततः मनुक्खे होइत अछि। तें दुनूक आशक्ति अन्योनाश्रित होइछ।

विनीतजीक कविता मोटामोटी हमरा तीन अर्थछायासँ वेष्ठित अनुभव भेल, कवितामे अपन कथनक कोटि, तकर पकड़ आ प्रयोगक विधि। एहि टटका, ऊर्जावान-संवेदनशील कविक पथ प्रशस्त हेतनि से विश्वास अछि। बहुत-बहुत स्नेह-शुभाशंसाक संग, कालजयी कविताक आशामे।

डॉ. गंगेश गुंजन

प्रस्तावना

गाम-घरक स्थिति, मिथिला आ अंग प्रदेशक सामजिकताक जर्जरता आ जीवनानुभवक छवि प्रस्तुत कविता संग्रह ***हम पुछैत छी*** *मे अछि। सभटा कविता तकरे ओझराहटिकेँ सोझरएबाक प्रयास अछि। जिनगीक आरोह-अवरोह, सामाजिक ओझराहटि आ रूढ़िवादी परम्परा मन-मस्तिष्कपर चोटक संग हृदएकेँ हिलकोरि कऽ दिमागकेँ सुन्न कऽ दैत छैक।*

एक कात मिथिलाक नब्बै प्रतिशत लोकक अदौसँ आएल परम्परासँ विरत होइमे हाथ-पएर फूलि जाइत अछि। दुनियाँक विकासकेँ आँच बुझै छथि, जाति-पाति, छुआ-छूतौवलिसँ हटि कऽ चलैमे प्राण जाइत छनि। ओहि समयमे हमर जनम समाजक मुँहपर चमेटा देबाक संग प्रश्न सेहो अनैत अछि।

एहन विकट परिस्थितिमे जखन दुनिया एकटा गाममे बदलि रहल अछि, जिनगीक सभटा डेग विषम अछि, ताहिमे कविता सृजनक एकपेरियापर अनबरत किए चलि रहल अछि?

हमर रचानात्मकताकेँ आगू अनबाक श्रेय आदरणीय गजेन्द्र ठाकुरकेँ जाइत छन्हि। हम आभारी छी पत्रकार मित्र आशीष झाक जे हमर सभटा कविताकेँ मनोयोगपूर्वक पढि त्रुटिक निदान कएलन्हि । हम आभारी छी अपन मित्रक संग घरक लोकक जे हमर कवित्वकक प्रशंसाक संग-संग समालोचना सेहो केलथि।

विनीत उत्पल

अनुक्रम

ककर गलती

कतेक दिवससँ
सोचैत रही
जे
गाम जाएब
परञ्च
दिल्लीक उथल-धक्कासँ
मुक्त होएब तखन ने।

पछिला दशहरामे
जखन गाम पहुँचलहुँ
तँ आड़ि पकड़ि टोल
अबैत रही।

ओहि ब्रह्मबाबाक ठामपर
एकटा स्त्रिगण बैसलि रहथि
की कहू, धक्कसँ रहि गेलहुँ
कंठक थूक कंठहिमे सुखा गेल

स्त्रिगण कोनो भूत नहि छलीह
ओ कोनो डाइन-जोगिन सेहो नहि रहथि

ओ गौरी दाइ छलीह
बियाहक ठामे साल
विधवा भेल

ताहि दिनसँ ओ नवयुवती
उजरा नुआ पहिरैत छथि
सीथमे चुटकी भरि सेनूर नहि,
गुमसुम रहैत समय काटि रहल छथि।

तँ हुनका देखि
सदिखन सोचैत छी
की यैह मिथिला थिक
यैह हमर संस्कृति थिक
मनकेँ मारि कए एकटा नवयुवती
जीवन काटि रहल अछि
ओकरा कियो देखनिहार नहि छैक

ओ नवयुवतीक सिउथ
जुआनीमे उजड़ि गेल
ताहि दिनसँ ओकरापर
की बितैत होएत

जे पति बीमारीसँ मरि गेलखिन
एकरामे गौरी दाइक की दोख
दोख तँ हुनक पिताक छनि

जिनका वरक बीमारीक जानकारी नहि छल
मुदा ओहो की करताह
घटक बनि कऽ गेल रहथि
द्वितीकार जे कहलन्हि
सैह ने सत्य मानितथि

ई गप सत्य छल
जे गौरी दाइ
अपन पिताक गलतीक
सजा भोगि रहल छथि
भाग्यकेँ कोसि रहल छथि

आब की कही
देश-परदेशमे तँ
वर- कनिया बदलि जाइत अछि
जेना छः मासपर
बदलैत छी हम अपन अंगा

मुदा, ई गौरी दाइ
बीसेक साल बादो
नहि बदलतीह
ओहि दिनसँ
पतिक वियोगमे
दिन-राति कुहरैत रहतीह

किंयो कतहुसँ खुशियोमे
हुनका नोत नहि देतन्हि
किंयो अपन नवजातकँ
खेलाबए लेल
नहि कहतन्हि

की करती गौरी दाइ
किंयो हुनका देवी कहतन्हि
तँ डाइन-जोगिन कहबासँ
लोक-वेद पाछुओ नहि रहतन्हि।

मनुखो नहि भेल

ओइ दिन जखन
भिनसरे काल
सूर्य उगैसँ पहिने
जखन आफिससँ डेरा पहुचलहुँ
डेड़ियापर एकाएक
डेग ठमकि गेल

सोचए लगलहुँ
देखू तँ, साँझ काल
जाइत छी आफिस
भोर-भिनसरे डेरा घुरैले

ई देशक राजधानी छी
मीडियामे काज करैत छी
मुदा,
रातिकेँ घरमे नहि रहैत छी
जखनकि चिड़ै-चुनमुनी सेहो
साँझ पड़ैत घर घुरैत अछि

एहि ठाम अपन बाबा सेहो
मोन पड़ैत छथि
बाबा कतेक तमसाइत रहथि
जखन हम अनहार भेलापर
घर नहि घुरैत रही

कहथिन ई बुड़बक भऽ गेल
साँझक बेला बितलाक बादो
घर नहि घुरैत अछि
कहिया बुधियार हएब अहाँ
आइ अहाँक पापासँ कहै छी

ओहि नेनपनमे हम
बाबाकेँ मनाबी
हुनकर पएर जाँती आ
सप्पत खाइ,
कही बाबा, काल्हिसँ सकाले आएब
कतेक लाम-काफ दैत रही
आ
किएक तँ पापाक थापड़क
नामेसँ थड़थरा जाइत रहए
हमर देह

मुदा आब जखन बाबा नहि छथि
पापा किछु नहि कहैत छथि

हम आइ अपन पएरपर ठाढ़ छी
चाहियो कऽ साँझ खन घर नहि
घुरि सकैत छी

सोचैत छी,
स्वर्गमे बाबा
बैसल हेता आ सोचैत हेता
ई बुड़बकहा
हमर गप नहिए मानलक
साँझ खन चिड़ैया-चुनमुन सेहो घर
घुरि अबैत अछि
मुदा ई मनुखो भऽ मनुख नहि भेल।

की फर्क पड़ैत अछि

ओहि दिन
संपूर्ण वैशालीमे
श्मशान सन
शांति छल

जहि दिन
आम्रपालीकेँ तथागत
कलयुगक यथार्थ बतौलखिन
आ कहलखिन
नहि केकरो आकांक्षा
तँ की फर्क पड़ैत अछि
आकांक्षा केकरो
तँ की फर्क पड़ैत अछि

कहब
एक बेर धोखा देलहुँ
कहब
एक बेर धोखा खेलहुँ।

अंगप्रदेश

बिसरि जाउ
ओहि कर्णक नगरी अंगप्रदेशकेँ
जतए
जकरासँ जे मंगितहुँ
से भेटैत

कहियो विक्रमशिला सन विश्वविद्यालय
रहै अहि ठाम
चारू कातसँ लोक आबथि
शिक्षा लेबा लेल

एहि ठाम अछि
मंदार पर्वत
जे अछि
समुद्रमंथनक निशानी

अहि ठाम आएल रहथि
कवि रविन्द्रनाथ
शरतचंद्रक नेनपन
बीतल एहि ठाम

मुदा
अंगप्रदेशपर
ककर नजरि लागल
ने ओ चास-बास ने आस

दलमलित होइत अछि
अंगप्रदेशक आत्मा
आ बजबैत अछि
तारणहार के।

परीक्षा

कहू वा नहि कहू
अलबल रीति-बीध
युग-युगसँ
अपन समाजक कोढ़-करेज
कोढ़ि अछि बनेने

एकटा पावनि अछि मधुश्रावणी
पत्नीक पतिव्रता सर्टिफ़िकेट लेल
होइत अछि अइमे टेमी
जकरा कहैत छी
हम अर्धांगिनी
बारंबार दैत छथि परीक्षा
त्रेतामे सीता ओ अहिल्या
कलयुगमे होइत नित अग्निपरीक्षा

छी हम पुरुष
मुदा छी बड़ डेरबुक
तहिसँ परीक्षा नहि दैत छी
नहि फेलक चिंता आ ने पासक

गाम डूबि गेल

भोरे-भोर
चन्दन भैयाक
फोन आएल

कहलखिन हालचाल
समाद देलखिन
अपन गाम डूबि गेल

सुनिकऽ सन्न रहि गेलौं
ओहि जन्मभूमि
ओहि मिथिलाक त्रासदी सुनि कऽ

सिलेमा जेना
गामक सभ टा दृश्य
आँखिक सोझाँ घुरै लागल

अपन फूसक घर
कक्काक पक्का मकान
द्वारि ओ भंसाघर मोन पड़ल आ
कुकुर ओ मालजाल
बाड़ी ओ कटहरक गाछ

भैया कहलखिन
चारिसँ पाँच फ़ुट
पानि छै आंगनमे

अपन गाम रहै
सभसँ ऊँच कहियो
नहि डूबैत छैक बाढ़िमे
देखू, चकाचक भS रहल
छैक राजधानी

एतएसँ दूर गाम-घरमे भरल छैक पानि।

पार्टनर, अहाँक मूल की ?

अहाँकेँ मोन छथि कवि मुक्तिबोध
जखन हुनका कियो नव लोक भेटैत छलनि
तँ पुछथिन
पार्टनर, अहाँक पालिटिक्स की

आब तँ मुक्तिबोध नहि छथि
मुदा मिथिलामे हुनकर गप
घर-घर मे
अहाँ सुनि सकैत छी

ई गप जखन-तखन नहि सुनबै
मुदा ब्याह-दानमे आ घटकैतीमे
सुनबै एकदम्मे
पार्टनर, अहाँक मूल की ?

अहाँकेँ एहि गपमे
अंतर किछु नहि लागत
मुदा पताल आ अकासक अन्तर छैक

मुक्तिबोधक गपमे मानसिक आ वैचारिक स्तर
देखबा मे आबैत छल
जखनकि मिथिलाक संस्कारमे
निखटुओ जे छथि से पूर्वजक गुणगानमे
पेटकुनिया धेने भेटताह

एकटा गप पुछै छी
आबकि राजतंत्र छैक
जे राजाक बेटा
राजा होएत ।

नहि टाइम अपना लेल

नेनामे गाम-घरमे सुनैत रही
नोकरी नहि करी
तखन तँ
एक कानसँ सुनि दोसर कान दऽ
उड़ा दैत रही

मुदा जखनसँ नोकरी केलहुँ अछि
बुझबामे आबि गेल नोकरीक भाव

नहि अपन ठाम नहि ठेकाना
जतए कंपनी पठेलक
ओहि ठाम वैह ठेकाना
नहि सुतैक टाइम
नहि उठैक आ नहि खाइलेल
नहि टाइम अपना लेल
यैह छै नोकरी ।

भाव-समर्पण

जीवनक जीवंतता की
मनुष्यक मनुष्यता की
जेहन मोन, जेहन भाव
तहिने होइत अछि भाव-समर्पण

नर्तकी जखन राग मालकौसमे
स्टेजपर बिजलीक बिजलौकामे
अपन संपूर्ण प्रतिभाक प्रदर्शन करैत छथि
देखू तखन की होइत अछि राग, की बनैत अछि भाव

लागत जेना देहमे नर्तकीक आत्मा नहि
देवता बैस गेल रहै
जे जेना नचा रहल छल
तहिना नर्तकी नाचैत छलि

की ततकार की ठाठ
की करी ओइ चकरघिन्नीक वर्णन
शब्दो तँ ओतेक नहि अछि
तँ कोना करी वर्णन
भाव-समर्पणक

अहाँ ककरो बेटी होएब
अहाँ ककरो बहिन होएब
मुदा अहाँ जकरासँ प्रेम करैत होएब
से होएत कतेक भागशाली

जे नर्तकी अपन संपूर्ण समर्पण-अस्तित्व
नृत्यमे झोंकि दैत अछि
ओकर प्रेम वा पुरुष
होएतैक सरिपहुँ संपूर्ण।

इतिहासक लिखल

कोनो इतिहासक पोथीक
पन्ना पलटि कऽ देखू
खाली शासक वा राजाक
इतिहास लिखल गेल छैक

रामाएण आ महाभारतोमे
शूरवीर आ विजेताक
गुणगान भरल छैक

भारतक स्वतंत्रताक पहिल
वा ओकर बादक इतिहास
एकरा सँ फराक नहि छैक

माउंटबेटनसँ लऽ कs
गांधी आ नेहरू
चंद्रशेखर आ अम्बेडकर धरि
गुणगानसँ भरल छैक

गांधीजी कहैत रहथि
देशक अन्तिम मनुखक
गप करू
ओकर नीक,
तखन होएत देशक उत्थान

हम पुछैत छी
इतिहास तँ कहियो
देशक अन्तिम मनुखक गप नहि लिखलक
तँ हम कोन लुरिये करब।

आतंक

आतंकसँ नहि होइत अछि
आतंकवाद खतम
ताहि लेल नहि गोली वा
बारूदक जरूरति

दू-चारि गोटेकँ पकड़ि कऽ
गोली मारलासँ
नहि सून-सपाट होएत
आतंकवाद ।

मार्क्सकँ जेना
रहै मार्क्सवादक जरूरति
समाजकँ रहै समाजवादक दरकार
आतंककँ नहि कोनो वादक आवश्यकता

खत्म करहि पड़त
आतंकक गाछ
ठारि काटलासँ

नहि चलत काज
संपूर्ण तंत्रक
करै पड़त ब्रेनवास

से सुनू,
समाजमे प्रेम आ भैयारी
भूख-प्यासक निदान लेल
शिक्षा ओ सदभावक
अलख जगबै पड़त

तहिसँ सुनर परिवार
सुनर समाज
सुनर देश
आ सुनर दुनिया होएत।

इन्द्रप्रस्थक कथा

युग-युगसँ लिखल जा रहल छैक
इन्द्रप्रस्थक कथा

द्वापर मे अहि ठाम छल
पांडवक राजधानी
जकरा पाबैक लेल
अठारह दिन धरि भेल महाभारत
मारल गेल हजारक-हजार लोक

समए बदलल
आब नहि छथि ओ पांडव
नहि ओ कौरव
मुदा आबो मारल जाइत अछि लोक

तहिया उजड़ि गेल छल गामक-गाम
आइ कामनवेल्थक नामपर
उजड़ि रहल अछि गरीबक झोपड़ी

हम पुछैत छी
शिखंडीकेँ आगू कऽ
रचल गेल छल षड्यंत्र
सत्ताक लेल भाइ-भाइक दुश्मन भेल
मारि-काटि कऽ केलक वंशक नाश

आब अहि इन्द्रप्रस्थमे
वर्ल्ड क्लासक नामपर
रचल जाइ अछि षड्यंत्र
गरीबकेँ भगेबाक लेल।

नोकरी आकि आजीवन कारावास

नेनामे अहाँ घोंइट-घोंइट कऽ
यादि करैत रहिऐ किताबक पन्ना
सोचैत रहिऐ खूब पढ़ि-लिखि कऽ
नीक सन नोकरी भेटत

तहि लेल दिन-राति घसैत रही कलम
क्लासमे अबैत रहि प्रथम
मुदा जखन नहि भेटल सरकारी नोकरी तँ
प्राइवेट नोकरी करै पड़ल
एहि समयमे नहि अपन लेल समए
नहि परिवारक भरण-पोषणक लेल पाइ
एहि ठाम विकट परिस्थितिमे
मन पड़ैत अछि बरटोल्ड ब्रेस्ट

हुनकर कहब छल जे एक गोटाकेँ
कम दरमाहा देब माने अछि आजीवन कारावास

हम पुछैत छी
अहाँ कहू वा बताऊ कोन नीक
कम दरमाहाबला नोकरी
वा आजीवन कारावास

एक ठाम, अहाँकेँ दुनिया भरिक रहत दायित्व
मुदा नहि रहत शांति
दोसर ठाम, अहाँकेँ दुनिया भरिक रहत शांति
मुदा नहि रहत कोनो दायित्व।

जाति-पाति

जाति-पाति धर्म-संप्रदाय लऽ कए जाधरि
एक-दोसराकेँ देखए नहि चाहबै
ताधरि अहाँक कल्याण नहि होएत

जखन अहाँ जनैत छी
कर्मक आधारसँ बाँटल गेल रहए
जातिक भेद तखन अहाँक ई आक्रोश-हाक्रोस
आ ई तामस वा चिचियाएब देखि कऽ
हँसी अबैत अछि हमरा

जहि जुगमे जेकरा जे नीक लागल
एहने धर्म वा संप्रदाय बनौने छैक
जकरा जाहिसँ चित्त जुड़ल
तहिसँ जुड़ल
जकरा जाहिसँ चित नहि जुड़ल
से नहि जुड़ल

ओहिनामे अहाँ जे
दोसराकेँ गारि-फज्जति करैत छी
ओहिसँ केकरो नहि
खाली अप्पन चिन्हास बतबैत छी।

एक धूर जमीन

एक धूर जमीनक लेल
जे अहाँ चिचिया रहल छी
की सोचैत छी
अहाँ संगे लऽ जाएब

एक धुर जमीन सँ
किछु नहि होएत
साल आकि हजार सालसँ
जमीन ओही ठाम छैक

आइ छी अहाँ
काल्हि नहि रहब
जे अहाँक जमीन छेकने छथि
ओ सेहो नहि रहताह

मरलाक बाद
चारि हाथ जमीन चाही
अंतिम संस्कार लेल
तकरा बाद सब छी माटि

तखन एक धूर माटि लेल
कथीले मरैत छी
कथीले चिचियाइत छी
कथी लेल मन मलिन करैत छी

तँ सुनु, नहि करू
एहि माटि लेल हाए-हाए
कोनो एहन काज करू
माटि आकि सभक करेजमे बैसि जाऊ।

चंद्रमुखी

अंगप्रदेशक लोक नहि जनैत अछि चंद्रमुखीकेँ

सुखी अछि जे सभ कियो
ओकरा नहि जनैत अछि
दुखी अछि जे कियो
ओकरा जनैत अछि

जे जनैत अछि शरतचन्द चट्टोपाध्यायकेँ
देवदासकेँ ओ जनैत अछि
जनैत छैक सेहो अंगप्रदेशकेँ

अंगप्रदेशक निवासी छलीह चंद्रमुखी
नगरवधू नहि
मुदा ओकरोसँ कम नहि छलीह
जोगसरमे हुनकर कोठा छल

शरतचन्द गेलाह
हुनकर संग चंद्रमुखीक आत्मा
अंगप्रदेशकेँ छोड़ि देलक
आब नहि ओ ठाम नहि ओ ठौर

जे पारो आकि देवदासकेँ जनैत अछि
चंद्रमुखीक तकलीफ जनैत अछि
जे नहि जनैत अछि
अनठेने अपनेमे रमल अछि।

मिथिला हमर देश

मिथिला हमर देश अछि
हमर रग-रगमे मिथिलाक पानि
आ हवा बसल अछि

तहिसँ जखन मोन पड़ैत अछि
बड़ाइ कऽ दैत छी
निंदा करबासँ पाछुओ नञि रहै छी

ई मिथिला हमर जन्मस्थान छी
ई मिथिला हमर पूर्वजक पहिचान छी
नीक वा अधलाह
ई मिथिला हमरेसँ नाम छी

अहाँ जेहन करब काज
अहाँ जेहन संस्कार पाएब
अहाँ जेहन संस्कार देब
ओहीसँ मिथिलाक जान छैक

से नहि ओहेन काज करू
से नहि ओहेन आस करू
जकरासँ नहि मात्र मैथिल आ मिथिला
मिथिलाक वासीक मोनकँ ठेस लागै।

वंशक चिराग

गाम-घरक जखन
हालचाल जनैत छी
सुनैत छी
फलनां मातृकमे अछि
नाना-नानीक संग

कोनो घर नहि भेटत
जे अपन बुत्तापर
अपन बच्चाक
पालन-पोषण कऽ सकत

दैत छी गप
लिअ लपालप
फकड़ा
लहालोट सभ घरे-घर भेटताह

दस मिनटक मजा
आ तकर सजा
माइ आ मातृकक लोक भोगता

जखन अहाँ जमाए बनि
सासुरमे अधिकार करैत छी
तखन अपन कर्तव्यकेँ
किए बिसरि जाइत छी

अहाँ देने छी बच्चाकेँ जन्म
अहाँक वंशक चिराग अछि ओ
अपनहिसँ पालन-पोषण करहिमे संतुष्टिक लेल
करहि परत मेहनत दिनराति एक।

फूसि आ सत

फूसि, फूसि आ फूसि
एकटा नुकाबै लेल हजार टा
फूसि बाजए पड़त

मुदा सत गपमे ई गप
किए नहि होइत अछि
एहन होइत अछि
एकटा सत बाजबाक संग
हजार सत आगू आबैत अछि

एहन लोक मे दूइ टा
गप होइत अछि
सत आकि फूसि
अहाँ कोन दिस ठाढ़ छी
वा होएब
ई अहाँक विवेक, बुद्धि वा निर्णयक क्षमतापर अछि

ई गप सत अछि जे
फूसिक महल
भुरभुरा कऽ खसि जाएत
सत्तक एकहि झोंकसँ।

बिकाइत छैक

कहियो अहि देशमे
कमला बिकाइत छथि
खबर छपलाक बाद
बबेला मचि गेल छल

राजस्थानक कमला
एक महीससँ
कम दाममे
बिका गेल रहथि

लोक वेद
एकटा स्त्रीगणक
बिकेबापर
कतेक हल्ला केलन्हि

आइ स्मरणमे अछि ओ गप
मुदा
एखनो मिथिलाक
पुरुषक दशा देखियऊ

लड़कीसँ ब्याह
नहि करैत छथि
दहेजक नामपर
बिका जाइत छथि
लड़कीक बाप हाथे।

महागरीब

एक दिनक गप अछि
छोटका नुनू आ भौजीमे
बाताबाती भऽ गेल

भौजी कहलखिन
ई धुर, अहाँ सभ
गरीब छी
नहि अछि मकान

नहि भेटैत अछि
भरि पेट भोजन
हमर नहियरक गप
किछु आओर अछि

छोटका नुनूकेँ नहि रहल गेल
ओहो किए पाछू रहितथि
मिथिलाक बड़का गपाष्टकमे
डुबकी लगौने कहलखिन

सुनू भौजी,
सभ बाप अपन बेटीक ब्याह
अपनसँ ऊँचमे करैत छैक
जे हम गरीब छी तँ अहाँक नहियर
अछि महागरीब।

चुनावक गप

चुनावक मौसम आबि गेल
सभटा नेता जे चुनावक मैदानमे
ठाढ़ होइत छथि अपन सम्पतिक लेखा
लोकक आगू रखैत छथि

केकरो एकटा वाहन नहि
केकरो अप्पन मकान नहि
कियो एहनो अछि
जेकरा लग छैक कुबेर सनक सम्पति

मुदा आम जनताक दिससँ
हम पुछैत छी
ओहि सम्पतिक लेख-जोखमे कतेक
सत रहैत छैक कतेक फूसि
अदालतमे तँ धर्मग्रंथक शपथ खाए
फूसि बाजल जा रहल छै सहस्त्राब्दीसँ।

पप्पू केकरा देत वोट

दिल्लीमे एहि बेर एकटा नाराक
खूब प्रचार-प्रसार भेल
"पप्पू कान्ट वोट"

माने ई जे
जे चुनावमे वोट नहि दैत अछि
ओ "पप्पू" अछि

माने ई जे
जे चुनावमे वोट नहि दैत अछि
हुनका अपन अधिकारक
आ कर्तव्यक ज्ञान नहि अछि

एकर मतलब ई भेल
इलेक्शन कमीशनकेँ पता छैक
जे बेसी लोक
अपन अधिकार आ कर्तव्यसँ विमुख अछि

तहिमे विज्ञापन वा प्रचारक की जरूरति
जेकरा ई ज्ञान नहि छैक
जे हम की करी
एकरासँ लोकतंत्रपर की फर्क पड़त

ओहिनो पागल वा दिवालियाकेँ
वोट देबाक अधिकार नहि छैक
एहि लोकतंत्रमे।

नहि करू घोषणा

जहियासँ होश सन्हारने छी
देखैत छी सभ चुनावमे हम
नेताजीकेँ करैत घोषणा

सड़क बनबा देब, घर बनबा देब,
रोजगारक सुविधा घर-घर पहुँचा देब
आर तँ आर
एक टकामे चाउर भेटत सभकेँ
एहन दिवास्वप्न देखाबैत छथि नेताजी

जे हुनकर सरकार की आओत
राइते-राइत दुनिया बदलि जाएत

साठि साल भऽ गेल
भारतकेँ लोकतंत्र बनल
साठि साल भए गेल
नेताक आश्वासनमे जीब

जागू जनता-जनार्दन जागू
एक बेर कहियौ
एहि नेता सभकेँ
अहि बेर नहि दियौ कोनो आश्वासन
नहि करियौ कोनो घोषणा

हुनकासँ एतबे टा कहियौ जे
अहाँक पार्टी
पछिला बेर तक
जेतबा घोषणा कएने अछि
ओहि टा केँ पूरा कए दियौ

एतबे टा पूरा करैत
युग बीत जाएत
एक खाढ़ीक नेता की करत
दोसर खाढ़ीक नेता
ओहि घोषणाकेँ पूर्ण करत
कए सकत आकि नहि
एकरोमे संदेहे।

दिअए पड़त वोट

लोकतंत्रक लेल
ई बड़ लाजक विषए छैक
जे चुनावक मौसम आबैक संग
नेता आ गधामे
कोनो अंतर नहि रहि जाइत अछि

जहि उम्मीदवारकेँ जेहि दलसँ
टिकटक जोगार लागैत छैक
ओहि दल सन रंगमे रंगि
खोल ओढ़ि लैत अछि

नहि कोनो भरोस
नहि कोनो सम्मान
बस जनताकेँ
मूर्ख बनाबैत छैक ई नेता

गिरगिटो एतेक तेजीसँ
अपन रंग नहि बदलैत छैक
जेना नेता बदलैत छैक
पार्टी वा सिद्धांत

आब समय आबि गेल
नेताकेँ सिखाबए पड़त सबक
जनता जखन जागत
तखन ई गप हएत संभव

एकरा लेल
अपन अधिकारक प्रयोग कए
दिअ पड़त वोट।

बदलि गेल वैशाली

वैशाली छल पहिल गणतंत्र
जतए जनता द्वारा
जनताक
आ जनतापर
शासन छल

सहस्त्राब्दीक बाद
जखन एक बेर
तथागत देखैले एलखिन
एहि भारतवर्ष
लाज आ तामससँ
घामे-पसीने भए गेलाह

एक गोटेसँ पुछलखिन
की रौ एहि भारतवर्षमे
लोकतंत्र छैक
हमर समयमे अहि ठाम
रहैक वैशाली, जतए छल गणतंत्र

तथागत अपन गप
जाधरि खतम करितथि
एकटा लोक
कहि देलखिन

हुजूर,
एतए लोकतंत्रक परिभाषा बदलि गेल
आब एहि लोकतंत्रमे
जनताकेँ बिसरि जाऊ

गोली-बारूद द्वारा
गोली बारूदक
आर गोली बारूदपर शासन
होइत छैक एहि वैशालीमे।

सपना अपूर्ण रहि गेल

आकाश मंडल साफ
सूर्यक ताप मद्धिम-मद्धिम
नीक लोकक एकटा फूटे
रोमांसक भाव आबैत रहैत

ओहि दिन जखन हम आ अहाँ
एक-दोसराक आलिंगनमे
एकाकार भेलहुँ
सूर्यक ताप कम भए गेल
वायुक वेग उद्वीग्न भए गेल

एक-दोसराकेँ निङहारैत उज्जवल करैत
दुइ साँस एक भए गेल
एक दोसरामे
पूर्णरुपेण एकीकृत होएबाक लेल
रोआं-रोआं पुलकित छल

मुदा,
जना सूर्य आ चांद,
अकास आ धरती
एक नहि होइत अछि
तहिना हमर सपना
अपूर्णे रहि गेल
आ सभटा लोक
चिर निद्रामे आलीने रहि गेल।

सामाजिक प्राणी

पहिलुक बेर
अहाँसँ भेल जखन भेंट
नहि अहाँमे एहन किछु गुण भेटल
जकरा मोन राखितहुँ

मुदा आस्ते-आस्ते सबंध प्रगाढ़ भेल
नहि रहलौं हम आ अहाँ अनचिन्हार
कने-कने कए एक दोसराकेँ चिन्हलहुँ
सुख-दुखमे संग काज-बेकाजक गप
सभटा सहभागी भेल

दिन होइत वा राति
जखन मोन पड़त
तखने फोनसँ गप भए जाइत छैक
जीवनक यात्रा
कखन धरि साथ चलत
कियो नहि जानैत छैक

मुदा एक टा गप मानैये पड़त
जे मोनक कोनो कोन
एक-दोसरक बिना खाली छैक

अरस्तु कहने रहैक
"मनुख एक टा सामाजिक प्राणी छी"
तहिसँ सामाजिकताक विचार करी
हम दूर-दूर छी
नहि जानि कहिया एक भेल रहितहुँ।

जीवनक पथिक

हम जीवनक पथिक छी
जहिना रेलगाड़ी चलैत काल
अपन पाछाँ
प्लेटफ़ार्मकेँ छोड़ैत चलैत छैक
तहिना जीवनमे पड़ाव आबैत रहैत छैक

अहाँ हमरा लेल जीवनक कोनो पड़ावपर
नीक केलहुँ वा अधलाह
हम अहाँक लेल
अधलाह केलहुँ वा नीक

जखन हम वा अहाँ
एक बेर शांत मस्तिष्क आ शांत हृदएसँ
सोचबै
वा सोचब जखन
विकट परिस्थितिक सामना करए पड़त

तखन जे दोषी होइत
ओ अपन चेहरा अएनामे
नहि देखि सकत
अपनाकेँ कहियो
माफ नहि कए सकत

मुदा, हे पथिक
ओहि काल हुनकर हाथमे
किछु नहि रहत
नहि ओहि ठाम
नहि हाथपर समए।

हम पुछैत छी

इतिहास साक्षी अछि
आइ धरि हम अहाँसँ
कोनो सवाल नहि पुछलहुँ
कोनो गप नहि बुझलहुँ

मुदा समए एतेक बदलि गेल
जाहिसँ हम पुछैत छी
नहि तँ जे रहत तटस्थ
समए लिखत हुनको इतिहास

जन्मसँ मृत्यु धरि
संस्कार आ समाजिकताक
बंधनसँ लोकवेदक
जकड़नहि छी किए? हम पुछैत छी

हम पुछैत छी, सभकेँ अपन
तरहेँ जिबाक छैक अधिकार
तखन अपन कर्तव्य बिसरि कए
दोसरक अधिकारक हनन किए ?

हम पुछैत छी, अंगरेज चलि गेल
मुदा अंगरेजिया लबादा किए अछि
किए अछि क्लासक पढ़ाइक सिस्टम
जिनका जे नीक लगितए ओ से विषय पढ़ितए

हम पुछैत छी, नेनासँ जीवनक लक्ष्य
निर्धारित किए नहि होइत छैक
समएक पाछु किए हम चलैत छी
समएक आगू चलैमे कोन तकलीफ

हम पुछैत छी, सूर्य सेहो उगै काल बदलैत रहैत अछि
तखन हम अपन सुतबाक, उठबाक आ खएबाक
समए किए निर्धारित करैत छी
किए निर्धारित होइत अछि ऑफिसक टाइम

हम पुछैत छी, गाम-घरक लोक
अपन गाम आ अपन जिलाक आगूक दुनियाँ
किए नहि देखैत अछि
जखन कि चिड़ै-चुनमुन कतहु चलि जाइत अछि

हम पुछैत छी, अठारह सालमे
जकरा देशक नेता चुनैक सूझ छैक
ओ अपन करियर आ अपन भविष्यक सूझ
किए नहि रखैत अछि

हम पुछैत छी, रामायण आ महाभारत
अहि ठाम लिखल गेल
एकरामे जतेक खिस्सा छैक
ओकरासँ बाहर किछु नहि भऽ रहल छैक
तखन आश्चर्य किए होइत अछि

हम पुछैत छी, एहि देशक नेता
चुनावक कालमे सेवा करैक शपथ खाइए
मुदा समए बितलापर देशकेँ खाइए
तखन हिनका लेल अहाँ तामस किए नहि फूकैत अछि

हम पुछैत छी, जाति आ धर्म, गोर आ कारि
जखन भारतसँ लऽ कऽ अमेरिका धरि
झगड़ाक कारण छैक
तखन एकरा खतम करबा लेल अहाँक खून
ठंढ़ा किए भऽ जाइत अछि

हम पुछैत छी, दुनियाक शांति लेल
पूरा दुनिया एक छैक
मुदा घरक शांति लेल
हम किछु नहि करैत छी

हम पुछैत छी, दुनियामे बेरोजगारी
महामारिक रूप धऽ रहल अछि

मुदा अपन रोजगार खोलबाक लेल
जड़ि किए भऽ जाइत अछि

हम पुछैत छी, बाढ़ि आ सूखाढ़सँ छी त्रस्त
दू सांझक रोटीक जुगाड़ लेल छी पस्त
तखन एहि शासनकेँ बदलबाक लेल
अहाँकेँ वोट देबामे दिक्कत की होइत अछि

हम पुछैत छी, चोरी-लूटपाट होइत अछि रोजीना
पुलिस करैत अछि आपराधिक खोज
तखन अहि सभसँ सचेत हेबामे
किए नहि रहैत अछि अहाँकेँ होश

हम उत्पल
जाति-धर्म-भेदभावसँ
उपर उठि कऽ पुछैत छी
अहाँक अपन व्यवहार
अहाँक अपन आचार
अहाँक अपन जाति
अहाँक अपन धर्म
अहाँक अपन स्थान
अहाँक अपन कर्म

अहाँक अपन पेशा
अहाँकेँ जे लागैत अछि असत्य
ओकरा बदलहिमे
की होइत अछि ?

मुदा अहि ठाम करैत छी घोषणा
जखनि धरि अहाँ अपने नहि बदलब
ताधरि नहि बदलत समाज
नहि बदलत राष्ट्र
नहि बदलत दुनियाँ।

गामक गप

एक युगमे होइत छैक बारह बरख
आ एक बरखमे होइत अछि तीन सए पैंसैठ दिवस
एक दिवसमे होइत छैक चौबीस घंटा
एक घंटामे होइत अछि साठि मिनट

हम कोनो अहाँकेँ गणित आ समएक
हिसाब-किताब नहि बुझा रहल छी
हम जोड़ि रहल छी कतेक समएसँ
गाम नहि गेलहुँ आधा युग बीति गेल गाम गेना

जहि दिवससँ बाहर अएलहुँ
शहरक रंग-ढ़ंगमे रंगि गेलहुँ
सोचैत छी हम एतहि बदलि गेलहुँ
ओ गाम कतेक बदलल होइत

छोटका काकाक द्वारपर आबो लागैत हेतै घूर
दलानपर बैठकीमे होइत हएत सभ शामिल
सूर्य उगलासँ पहिनहिये सभ जाइत हेतै लोटा लऽ कए
दतमैनसँ मुँह आबो धोइत हएत आकि नहि गामक लोक

पाँच बरखमे सरकार बदलि जाइत छैक
गामक लोकमे सेहो परिवर्तन भेल हएत

लकड़ी-काठीसँ चुलही जरैतत हेतै आकि नहि
बभनगमावाली भौजी चाएपत्ती मांगइले
आबैत हेतै आकि नहि
गोबरसँ घर-द्वार नीपाइत हेतै आकि नहि
दरबज्जापर माल-जालक टुन-टुन बाजैत हेतै आकि नहि

ई सभ सोचैत काल हम
एक-एक गपक तुलना करैत छी शहरसँ
गाम आ शहरमे फर्क भऽ गेल छैक
जमीन आ आसमानक

मुदा,
सभ किछु गाममे बदलि गेल
नहि बदलल छैक तँ आत्मीयता।

बच्चा नीक छै

ई बच्चा नीक छै
कतेक नीक तकर मापदण्ड नहि कोनो
सुसंस्कृत-संस्कारवान छै कतेक
तकरो पैमाना नहि छै

बेसी बजै नहि छै
दुनियादारीक नव वस्तुकँ
बूझाबक इच्छा नहि छै
ताहि लेल ई बच्चे नीक छै

माएकँ दूध पिएबाक लेल
तंग नहि करैत छै
नहि भेटैत छैक तखनो चुप्पे छै
आ ताहि लेल ई बच्चा नीक छै

दुनियाक फ्रीसानी देखि कऽ
अपन दुखक सोचि कए
ई बच्चा कानब बिसरि गेल
ताहि लेल ई बच्चा नीक छै

माए-बापक झगड़ा देखि कए
घरमे अशांतिसँ घबराएल ई बच्चा
केकरो किछु नहि कहैत छै
ताहि लेल ई बच्चा नीक छै

जे रटाएब से रटत
अपन दिमागसँ किछु नहि पूछत
किताबी कीड़ा छै ई बच्चा
ताहि लेल ई बच्चा नीक छै

सोचैक क्षमता नहि छै
माए-बापसँ पूछि कए
करैत अछि सभ काज
ताहि लेल ई बच्चा नीक छै

दुधमुँहा बच्चा जेना
नहि किछु बाजैत अछि
नहि किछु काज करैत अछि
ताहि लेल ई बच्चा नीक अछि।

जिनगी एकटा तमाशा

जिनगी एकटा तमाशा छै
कखनो उतार कखनो चढ़ाव
कहियो खुशी कहियो गम
एकरे नाम जिनगी छै

जिनगी एकटा तमाशा छै
केकरो जीतपर केकरो दुःख
केकरो हारिपर ककरो सुख
सुख-दुखक सार जिनगी छै

जिनगी एकटा तमाशा छै
एक ठाम फेल
तँ दोसर ठाम पास
पास-फेलक झमेला जिनगी छै

जिनगी एक तमाशा छै
केकरो कानलासँ हँसब
केकरो हँसबासँ कानब
हँसबाक-कनबाक खेल जिनगी छै।

स्त्रीगण

स्त्रीगणकेँ दोसर दर्जाक मानलासँ
पुरूष समाजकेँ की भेटैत छैक
किछु संतुष्टि किछु घमंड
सोचैत छी हमहीं सर्वश्रेष्ठ

मुदा एहि फुसियाहीक गपसँ
नहि किछु भेटत
केकरो दुःख दऽ कऽ
अहाँकेँ सुख भेटैत अछि ?

तँ सुन लिअ एकटा गप
अहाँ कहियो सुखी नहि रहब
स्त्रिगणसँ सीखू
सामंजस्य बनाबैक लेल प्रबंधनक गप
आ धैर्यक क्षमता

कहबामे ई सभ छोट गप लागैत अछि
मुदा अहाँकेँ क्षमता नहि अछि जे
नौ मास एक जीवनक भार साधी
भोरसँ साँझ धरि भनसाघरमे रंग-बिरंगक
तीमन बना सकब

कतबो दियौ तर्क कलेजापर हाथ धरि कऽ
एक बेर सोचब अहाँ आ
एक स्त्रिगणक क्षमतामे अन्तर
हृदए ओ दिमाग खुजि जाएत
अहाँक घमंड चिर्री-चोंथ भऽ जाएत

अहाँकेँ मानहि पड़त तुच्छ छी अहाँ
दोसर दर्जाक तँ अहाँ छी
अपन कमी नुकाबैले धक्कममुश्ती करैत छी।

सभ्य समाज

तथाकथित सभ्य समाजमे
प्रेम करैक अधिकार नहि छैक लोककेँ

अहाँ प्रेम करबै तँ घरसँ बारल जाएब
समाजमे प्रतिष्ठा खत्म भए जाएत
अहाँ होएब घृणाक पात्र

अहाँ माएसँ प्रेम कए सकैत छी
अहाँ पितासँ प्रेम कए सकैत छी
अहाँ बहिनसँ प्रेम कए सकैत छी
अहाँ भाइसँ प्रेम कए सकैत छी
अहाँ घरसँ प्रेम कए सकैत छी
अहाँ पढाइसँ प्रेम कए सकैत छी
अहाँ करियरसँ प्रेम कए सकैत छी
अहाँ कुकुड़सँ प्रेम कए सकैत छी

मुदा नहि कए सकैत छी प्रेम
स्वर्णिम भविष्यक लेल
एक मनुष्य सँ

ई *सभ्य* समाजक परिभाषा छैक
माए-बापक पसिनसँ ब्याह करू
माए-बापक पसिनसँ प्रेम करू
माए-बापक पसिनसँ बच्चा जनमाऊ।

नीक लोक

नीक लोक ओ
जे रहैत अछि इमानदार
बेइमानी जखन धरि
रहैत अछि नुकाएल

नीक लोक ओ
जे रहैत अछि सत्यवादी
पकड़ल नहि जाइत छैक
जखन धरि झूठ

नीक लोक ओ
जे रहैत अछि संस्कारी
जखन धरि आगू नहि
आबैत छै राक्षसी प्रवृति

नीक लोक ओ
जे रहैत अछि विश्वासी
जखन धरि मुँह नहि खोलैत अछि
धोखा पाओल लोक

नीक लोक ओ
जे नहि करत अश्लील गप
जखन धरि आगू नहि
आबैत अछि कामुक प्रस्ताव

नीक लोक ओ
जे करत लोक संग मीठ गप
जखन धरि आगू नहि
आबैत छैक प्रताड़ित पत्नी।

हम हुनकर छी

हम हुनकर छी जिनकासँ
रूप आ रंग पेने छी

हम हुनकर छी जिनकासँ
संस्कार आ मर्यादा पेने छी

हम हुनकर छी जिनकासँ
अक्षर आ शब्द पेने छी

हम हुनकर छी जिनकासँ
कदम आ ताल पेने छी

मुदा हम हुनकासँ अलग छी
जिनकर ओछपन आ सतहीपन
आत्माक आगू खसबाक लेल
मजबूर करैत अछि।

गप नहि मानलहुँ

अहाँ दोषी छी
अहाँ अपराधी छी
अहाँ चोर छी
अहाँ अभागल छी
अहाँ देशद्रोही छी
अहाँ स्वार्थी छी

ई गप हम नहि
काल कहि रहल अछि
ई गप हम नहि
इतिहास कहि रहल अछि
ई गप हम नहि
अहाँक आत्मा कहि रहल अछि

अहाँ कहियो आत्माक गप नहि मानलहुँ
समाजक फूसि
प्रतिष्ठाक पाछु भागैत रही
ताहि लेल छी दोषी

अहाँ कहियो आत्माक गप नहि मानलहुं
फूसि ठाठ-बाट लेल
औनाइत जीलहुँ जिनगी
ताहि लेल छी अपराधी

अहाँ कहियो आत्माक गप नहि मानलहुँ
स्वयंकेँ नीक कहबाक लेल
अपन शान्ति चोराबैत छी
ताहि लेल छी चोर

अहाँ कहियो आत्माक गप नहि मानलहुँ
स्वयंकेँ भाग्यवादी देखबाक लेल अभागल बनल रही
ताहि लेल छी अभागल

अहाँ कहियो आत्माक गप नहि मानलहुँ
देश सेवाक आगि रहैत
मुदा देशकेँ लुटलहुँ
ताहि लेल छी देशद्रोही

अहाँ कहियो आत्माक गप नहि मानलहुँ
समाजक सेवा करैत-करैत
अपन सेवा करए लगलहुँ
ताहि लेल छी स्वार्थी।

मन पड़ैत अछि

मन पड़ैत अछि पापाक डांट
जखन हम नहि पढ़ैत रही

मन पड़ैत अछि पापाक स्नेह
जखन हम सभटा टास्क पूरा कए लैत रही

मन पड़ैत अछि पापाक संग घूमब
जखन भोर-साँझ टहलइले जाइत रही

मन पड़ैत अछि पापाक चौकीपर सुतब
जखन थाकि गेलापर जाँतैत आ तेल लगाबैत रहथि पापा

पापा एखनो बिगड़ैत छथि आ स्नेह करैत छथि
एखनो घुमाबएले लऽ जाइत छथि आ
चौकीपर सुतैत छथि
मुदा हम आइ गाममे नहि छी।

माएक तपस्या

बच्चाकेँ जनम देब
तपस्या अछि माएक लेल
एहिसँ बेसी कठिन तपस्या छैक
जखन तीनटा बेटी रहए
आ घरक लोक हुअए रूढिवादी

मिथिलाक सभ घरमे एहन माए भेटत
जकरा एकटा बेटाक लेल
पति, ससुर आ साउस
करैत रहैत छैक नाकोदम

अशिक्षाक मारल समाजक लोक
बेटीक नहि बुझए मोल
बेटा भेलापर
छाती फुला कऽ घुमैत अछि

बेटाकेँ पाबैक लेल
मन्दिर-मस्जिद जा कए
कौबला माँगैसँ पाछू
नहि रहैत अछि

बेटी भेलापर
सासुरमे कोहराम
मचैत छैक
प्रसूताकेँ भरि पेट
प्रताड़ित करैत छैक

मुदा एहन समएमे
सुनबा वा बुझबा लेल
तैयार नहि छैक
आकि बच्चाक जनम
एकटा तपस्या छैक ।

महान लोक

आम लोकक लेल
होइत छैक निअम वा कानून

महान लोकक लेल
नहि होइत अछि ई सभ किछु

आम लोक आम रहि गेल
कृष्ण भगवान भए गेल
राम भगवान भए गेल
अशोक सम्राट भए गेल

जान बचाबैक लेल
कए दियौ ककरोपर प्रहार
तँ भए जाएत मामला दर्ज
मुदा *महान* लोकक जानक खातिर
तैयार रहैत अछि हजार जान

अपन सुविधानुसार
निअम बदलि लैत छथि
कानून बदलि लैत छथि
ई महान लोक

आम लोक करए ई काज
तँ भऽ जाएत अपराधी
एहि तरहक एही लेल
कियो बनि जाइत अछि *महान*।

मनुख आ माल

आइ फरियाएल जाए
अपना सभ मनुख छी आकि माल
किएक तँ दुनूमे छैक
जमीन आ आसमानक अंतर

एकटा पेटक लेल रहैत अछि ललाइत
एकटा परिवारक लेल रहैत अछि कपसैत
एकटा फूसि प्रतिष्ठाक लेल करैत अछि छल-प्रपंच
एकटा पाइ-कौड़ीक लेल घड़ी-घड़ी करैत अछि नौटंकी
एकटा मानसिक संतुष्टि लेल बौराइत अछि दिन-राति
एकटा शारीरिक संतुष्टि लेल होइत अछि व्यभिचारी
एकटा पएरपर ठाढ़ भेलाक बाद माए-बाप कऽ दैत
अछि कात

दोसर तँ अछि चारिटा टांगबला
अपन पेट भरलाक बाद दैत छैक दोसरकँ अवसर
सभ कियो ओकर सहोदर छथि
झूठ लेल प्राण नहि गमबैत अछि
दोसर नहि बौराइत अछि
मानसिक वा शारीरिक संतुष्टि लेल

पएरपर ठाढ़ भेलाक बाद
माए-बाप स्वतंत्र कऽ दैत अछि

अहिनामे के ककरासँ उत्तम
ई कहैक गप नहि अछि
मनसँ सोचैत आत्मासँ जाँचैत
निश्चित करू जे नीक के?
मनुख आकि माल।

समाजक ई रूप

इहो अछि एहि समाजक चेहरा
दिल्लीक बाटपर बत्ती लाल भेलापर
इंदौरसँ निजामुद्दीन वा पटनासँ दिल्लीक लेल ट्रेन पकड़बा लेल
आ फेर घरक दुआरिपर
दस्तक दैत देखबामे आबैत अछि ओ

नहि तँ पुरूष अछि आ नहि एकटा स्त्री
भरिसक शारीरिक रूपमे
मुदा मन वा अभिनयक स्वरूप
रहैत अछि अलग-अलग से
से हुनकर की नाम देल जाए

माएक कोखिसँ इहो लेल जनम
भाइ-बहिनक संग पोसाएल-बढ़ल
स्कूलमे पढाइक सीढ़ी चढ़ल
मुदा फारम भरैत काल खसल भारी बिपैत
किएक तँ आपशन छल दू टा स्त्री वा पुरूष
तखन शुरू भेल हुनकर
सामाजिक बहिष्कार

नहि घरक रहल नहि रहल घाटक
परिस्थिति सभकेँ
जीएब सिखा दैत छैक
से देखबामे आबैत अछि
बाट सँ लऽ कऽ ट्रेन धरितक।

गप

शुरू करल जाए फेरसँ गप
जतए खत्म भऽ गेल छल
अपन गप आ संवाद

मुदा एहि बेर ध्यान राखब
एकटा गप जे
एक-दोसरकँ स्वाधीन छोड़ब
से बेसी नीक होएत

बिसरै पड़त के फूसि बाजल छल
के सत्यक रस्ता पकड़ने छल
विश्वासघात आ पश्चातापक घोंट के पी गेल छल

के ककरा देलक ई कष्ट जे अनुभूत तँ भेल
मुदा कहल नहि गेल
भूगोल आ इतिहाससँ दूर भऽ कऽ

एहि समयांतरालमे दुनियाँ बदलि गेल
धरतीस चन्द्रमापर पहुँचि गेल लोक
खाढ़ी-खाढ़ीढ़ी खत्म भऽ गेल आ
नबका लोक आबि गेल

आब नोर नहि बहैत अछि शब्दक जालसँ
ताधरि हृदय मोम नहि बनैत अछि
ककरो नोरसँ

अनंत कालक स्मृति आइयो
सिनेमा जेकाँ आंखिक आगू घुमैत जाइत अछि
बिना कोनो ब्रेक आ इंटरवलक नक्सलक नामपर
मरि जाइ छथि लोक लहाशक ढेर

से गुजारि रहल छथि दिन आ राति
डेग-डेग पर बारूदी सुरंग
आ बंदूकक नोकक आगू
निन्द नहि आबैत छैक लोककेँ
जखन ई बात सहस्त्राब्दीसँ छल

इराकसँ लऽ कऽ अफगानिस्तान धरि
मनुख नहि छैक
ओ मनुख जकरामे एकटा आत्मा छल कहियो
ओ भऽ गेल अछि मशीन

एकटा ओसामा बनि गेल छल अशांतिक प्रतीक
दोसर ओबामाकेँ भेटल शांतिक आशामे नोबल

एहि युगमे जतए बाट एतेक कंटकाकीर्ण छैक
ओतए बिसरल बाट ताकहि पड़त
गप शुरू करहि पड़त
एक ठां बैसै पड़त
एकटा उम्मेदक संग
कोन गपसँ खत्म होएत मोनमुटाव
बुझाउ जे कखनो धोखा खा सकैत अछि ओ
एहि बाटपर।

सुतल अछि अनंतकालसँ

ओ सुतल अछि अनंतकालसँ
एहन नहि जे ओ बेसी थाकल अछि
एहनो नहि जे ओ राति भर जागल अछि
घर वा दफ्तरमे कलह नहि भेल अछि ?

ओ सुतल अछि अनंतकालसँ
राति भरि करट बदललाक बाद
राक्षसी खानपान केलाक बाद
देहमे शिथिलता एलाक बाद
दू टकाक लेल झूठ-फूसि केलाक बाद
अदहा दुनियापर कुचेष्टा केलाक बाद

ओ सुतल अछि अनंतकालसँ
किएक तँ हुनकर मामलाक सभटा गप
फूसि अछि

सत्यकेँ फूसि वा फूसिकेँ सत्य
बना कऽ प्रस्तुत करब
हुनका लेल छैक आसान

किएक तँ
हुनकर निन्द नहि अबैत छै
सत्यक सोझाँ
हुनकर निन्द नहि आबैत छैक
कटु सत्य सुनलापर

ओ सुतल अछि अनंतकालसँ
किएक तँ ओ पढ़ि नहि सकल
किएक तँ ओ एहन भक्त अछि जे
खाली 'जी हँ, जी हँ' करैक अतिरिक्त
आ तरबा चटबामे आगू
नहि कऽ सकैत अछि कोनो काज

किएक तँ सुनि नहि सकैत अछि ओ
जे ओ अछि
आस्थापर विश्वास कऽ सकत
मुदा नहि कऽ सकत सम्वाद

तँ आबि गेल अछि ई समए
कुंभकर्णी नींदमे सुतल लोककँ जगैबाक
तथ्य आ तर्कक कसौटीपर कसबाक
अनपढ़कँ पढ़बाक
किएक तँ बुड़बक ज्ञानी
कखनो ककरो किछु नहि सुनि सकैत अछि।

लहाशक अश्मसान घाट

आब हड़ताल नहि होइत अछि
कार्यालयमे, फैक्ट्रीमे
अपन मांगकेँ लऽ कऽ कोनो शहरमे

आब धरना-प्रदर्शन नहि होइत अछि
मंत्रालय वा विभागक आगू
कोनो मुआवजाकेँ लऽ कऽ
कोनो भीड़भाड़बला सड़कपर

आब झगड़ा-फसाद नहि होइत अछि
चौक-चौराहा वा चौबटियापर
अपन अधिकारकेँ लऽ कऽ कोनो मोहल्लामे

जखन की एखनो मांग अछि यथावत
नहि भेटल एखन धरि केकरो मुआवजा
अपन अधिकारेसँ बेदखल कएल जा रहल छथि लोक
सब दिश नजरि आबि रहल अछि मुद्दा-मुद्दा

स्त्रीक मांग भऽ रहल अछि सून
समाजक तथाकथित सफेदपोश ठेकेदार

निकालि रहल छथि टाटी
घुटि रहल छथि स्त्रीगण, पुरूख

जे से,
ओ देश, देश नहि
जतए मांगकेँ लऽ कऽ
मुआवजाकेँ लऽ कऽ
अधिकारकेँ लऽ कऽ
आ मुद्दाक लेल
अबाज नहि उठैत अछि
पसरल रहैत अछि निःशब्द मौन

ओ लगैत अछि मुर्दाघर।

मन पड़ैत अछि-२

कतेक दिन बाद आइ
मन पड़ैत अछि रामप्रसाद
ओ रामप्रसाद जेकर पिता आ पितामह
हमर पितामहक हरबाह छल

मन पड़ैत अछि हुनकर हर
जकरासँ खेत जोतैत छल भोर आ साँझ
ताहि दिन कतेक मन लगैत रहैक गाममे

ओहि हरमे जोतैत छल दू टा बड़द
बड़दक घंटी आबो बाजैत अछि कानमे

मन पड़ैत अछि जखन धान काटि कऽ
बोझ राखल रहै आंगन आ दुआरिपर

मुदा समए बीतल
नहि रहल आब रामप्रसाद
नहि रहल आब पितामह
नहि रहल आब दुआरिपर हर आ बड़द

गाममे ट्रक्टर आबि गेल
थ्रेसरसँ आब काज होइत अछि
से निन्न नहि टुटैत अछि घंटीसँ
आ नहि बोझ रखाइत अछि आंगनमे।

समाज

अंगरेजीमे एकटा फकरा अछि
अहाँ प्रेम कऽ सकैत छी
अहाँ घृणा कऽ सकैत छी
मुदा अहाँ हमरा नकारि नहि सकैत छी

ककरो छोट कहबासँ
कियो पैघ नहि भऽ जाइत अछि

ककरो चोर कहलासँ
कियो हवलदार नहि भऽ जाइत अछि

ककरोसँ संबंध बनलासँ
कियो संबंधी नहि भऽ जाइत अछि

'माँ' शब्द बजलासँ
कियो अपन मां नहि भऽ जाइत अछि

ककरोसँ नहि बजलासँ
कियो बौक नहि भऽ जाइत अछि

ककरो निंदा केलासँ
कियो प्रशंसाक पात्र नहि बनि जाइत अछि

ककरो मित्र नहि बनबै छी तँ
कियो दुश्मन नहि बनि जाइत अछि

ई सभ गप एकटा प्रहेलिका नहि अछि
परिस्थिति अछि समाजक
जतए समाज, संस्कृति, परंपरा आ
कतेक 'वाद'क नामपर अपन दोष
नुकैबे लेल दोसरकेँ दोषी
ठहराओल जाइत अछि सदएसँ।

मरलाक बाद

अपन देशमे एकटा अछि
लतमारा गोसाईं
ढेलमारा देवता आ पूजाक स्थान

अहिठाम पहिने
लात मारल जाइत अछि
आ ढेला फेंकल जाइत अछि
तकर बाद प्रेमसँ होइत अछि पूजा

फकरा अछि
मरले गुण की पड़ैले गुण
ताहिसँ मरलाक बाद
सभ कियो भऽ जाइत अछि देवता

जीवित मनुक्खसँ दुश्मनी
आ मरलाक बाद एहन नीक
जे कहलो नहि
जाइत अछि

मुदा
ई गप नहि
ई अछि हमर सभक संस्कार
आ विचार
बढ़ैत लोकक निंदा करब
नीक लोककेँ गारि पढ़ब

काज कम बेसी गप देब
ई छी हमर सभक
संस्कृति आ शिष्टाचार

उगैत सूरजकेँ प्रणाम सभ कियो करैत अछि
अप्पन देश टामे मनाओल
जाइत अछि छठि
जाहि मे डूबैत सूरुजक
कएल जाइत अछि अराधना
मुदा एकरोसँ किछु नहि सीखैत छी हम

से डूबैत लोकक काटि लैत छी गरदनि
साहित्य, समाज, कला आ राजनीतिक कोनो समाजमे

ककरो कियो नहि करत आदर
श्राद्धकर्म आ पेट भरि भोज खा कऽ
कहत मरलाक बाद
अहाँक आत्मा भऽ गेल तृप्त

जीवित रहैत जकरा अहाँ नहि सोहाबैत छी
ओ कहत अप्पन संस्मरण,
कहत अहाँ रही देवता सन

अहाँक नाम पर स्थापित होएत संस्था
अहाँक नामपर देल जाएत पुरस्कार

जीवित रहत अहाँक कृतित्व आ व्यक्तित्व
आरोप लगबैत रहै बला लोक
गुणगान करत अपन नाम अहाँसँ जोड़त
भरल जाएत पन्ना पोथीक
छापत अहाँक संगक स्मरण

सभ बरख अहाँक मरलाहा दिन
कोनो नीक सभागारमे
फोटो सजाकऽ फूल-माला चढ़ाकऽ
देल जाएत बड़का-बड़का गप

आ नोर बहाओत लोक
जेना सभसँ बेसी कष्ट हुनका भेल
एकर कारण ई जे आब
नहि दऽ सकत केकरो गारि

ईर्ष्या, द्वेष, झंझट
आ छल-प्रपंच
सभटा दोष देल गेल जखन
रही एहि धरा पर

तपस्वी, सुकर्मी आ
अनंत विभूषणसँ विभूषित भऽ गेलहुँ
जखन बैसल छी अहाँ
स्वर्ग वा नरकमे

सुनु तात हमर गप
अपन काज कम
दोसराक काजमे टांग भिड़बैत
निंदा-शिकाइत करैत
काठपर जड़ैत माटिसँ निकलि कऽ
माटिमे मिलैत
कतबो गप फेकब इएह छी यथार्थ
रहि जाइत अछि अहाँक नीक कर्म
आ अहाँक नीक बोल।

पुष्कर

पुष्करक घाटपर बैसल
ओहि साँझ, पोखरिकेँ निङहारैत
लोक-वेदक मुद्राकेँ देखैत
वेदपुराण, वाल्मिकी रामायण आ
महाभारत मनमे घुरमैत

एक-एक दृश्य मनकेँ उमंगित करैत
एहि ठाम ब्रह्म यज्ञ कएने छलाह
एहि ठाम भगवान राम पिता दशरथक श्राद्ध कएलन्हि
एहि ठाम श्रीकृष्ण दीर्घकाल धरि तपस्यामे लीन छलाह
एहि ठाम सुभद्राक अपहरण कऽ अर्जुन विश्राम कएने छलाह

चारू दिस अरावलीक पहाड़
सहृदय नाग पर्वतमालाक आँचरमे
बावन घाटक ई सरोवर
कतेक खिस्सा अपनामे
समेटने अछि

अगस्त्य, भतृहरि
जमदाग्नि ऋषि

विश्वामित्र, कपिल
आ कण्व मनीषीक
तपस्या आ यज्ञ स्थली अछि

ई तीर्थराज पुष्कर जयपुर घाटसँ
सूर्यास्तक दृश्य
रामानुज संप्रदायक विशाल बैकुंठ मंदिरकेँ ताकैत
आदि शंकराचार्यकेँ मन पाड़ैत
मन प्रफुल्लित आ उद्वेलित भऽ जाइत अछि

पुष्करक हवा-बसात, मंदिर आ घाटक दृश्य
गोकुलचंद पारेखक कएल जीर्णोद्धार मंदिर
आ आदि शंकराचार्यक स्थापित कएल ब्रह्माजीक मूरूत
एतए आबए बला लोककेँ मोन पाड़ैत अछि
कहबी 'सारे तीरथ बार-बार, पुष्कर तीरथ एक बार'।